श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल ने खर्च किए 11 लाख, मरीज आए कुल 3

नियम ताक पर रखकर सोसायटी की एफडी के बदले लोन लिया गया, कौन भरेगा ये लोन

रजिस्ट्रार सोसायटीज के प्रशासक की जगह कंवल खत्री गुट चला रहा है कोविड सेंटर

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः इस महीने की शुरुआत में ही श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का कोविड सेंटर खुलने के बाद यहां अब तक सिर्फ तीन मरीज ही आए हैं। अस्पताल के प्रबंध पर कुल मिलाकर अभी तक करीब 11 लाख रुपये खर्च हो चुके हैं। अस्पताल को दरअसल कौन चला रहा है, अब यह गहन छानबीन का विषय हो गया है। इस संवाददाता ने मौके पर जाकर पड़ताल की तो अस्पताल को पूरी तरह निलंबित प्रधान कंवल खत्री, उनके खासमखास जोगिन्द्र चावला और कुछ अन्य लोग नियंत्रित करते मिले, रजिस्ट्रार सोसायटीज द्वारा नियुक्त प्रशासक का कहीं अता-पता नहीं था।

मौके पर पहुंचा संवाददाता

मजदूर मोर्चा संवाददाता ने बुधवार को तिकोना पार्क स्थित श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का दौरा किया तो अस्पताल के गेट पर सोसायटी के निलंबित प्रधान कंवल खत्री एक व्हील चेयर को ठीक करते नजर आए। उन्होंने फौरन बताया कि यह व्हील चेयर अभी-अभी कोई भेंट करके गया है। उन्होंने बताया कि अब तक कुल तीन मरीज ही आए हैं, जबकि करीब 11 लाख रुपये वेतन आदि और अस्पताल संचालन पर खर्च हो चुके हैं। जिसमें बिजली का बकाया बिल का भरा जाना भी शामिल है। वो इस बात से परेशान दिखे कि कोविड के मरीज तो नहीं आ रहे हैं और लहर भी थम गई है। अगले महीने वे कर्मचारियों और डॉक्टरों को वेतन आदि कहां से देंगे।

कंवल खत्री ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि यहां भर्ती होने वाले मरीजों की रोजाना की फीस तीन हजार रुपये रखी गई है। बाकी प्राइवेट अस्पतालों के मुकाबले यह फीस कम है। इसलिए जायज है, क्योंकि हम मरीज को सर्विस भी तो दे रहे हैं। इस संवाददाता ने जब उनसे पूछा कि भाजपा विधायक सीमा त्रिखा ने तो यहां मुफ्त इलाज की घोषणा की थी, फिर तीन हजार रुपये प्रतिदिन की फीस क्यों ली जा रही है तो इस सवाल पर कंवल खत्री चुप रहे। उन्होंने अस्पताल को समाजसेवियों से मिल रहे सहयोग को बताना शुरू कर दिया।

कौन चला रहा कोविड सेंटर

श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी में उठे विवाद के बाद यहां एक रिटायर्ड कर्नल संतपाल को रजिस्ट्रार सोसायटीज फरीदाबाद ने प्रशासक नियुक्त कर दिया था। उनका एक महीने का वेतन 44 हजार रुपये तय किया गया। हाल ही में एमसीएफ ने इस अस्पताल को कोविड सेंटर के तौर पर चलाने की अनुमति दी थी। प्रशासक संतपाल ने खुद को इस कोविड सेंटर का संचालनकर्ता घोषित कर दिया। लेकिन आरोप है कि उन्होंने कोविड सेंटर चलाने में अपनी मदद के लिए पांच लोगों की एक कमेटी बना दी। प्रशासक ने इस कमेटी में कंवल खत्री, जोगिन्द्र चावला, डा. अनूप और अन्य दो लोगों को सदस्य बना दिया। लेकिन प्रशासक ने सोसायटी के दूसरे पक्ष के किसी एक को भी इस कमेटी में नहीं रखा। इस संवाददाता ने बुधवार को खुद देखा कि कंवल खत्री और चावला ही कोविड सेंटर का संचालन कर रहे थे। सारे कर्मचारी उनके आदेश मान रहे थे। कोविड सेंटर पर प्रशासक का कोई पता नहीं था। वहां काम कर रहे कर्मचारियों ने बताया कि हम तो यहां ज्यादातर खत्री और चावला या फिर डॉ अनूप को ही देखते हैं। यही लोग हमें सारे निर्देश देते हैं।

कहां गए 6 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर?

आईएमए ने हाल ही में 24 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर यहां बने कोविड सेंटर के लिए दिए थे। भाजपा विधायक सीमा त्रिखा और कंवल खत्री ने कैमरे के सामने कहा था कि हमें आईएमए ने 24 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर भेंट किए हैं। आईएमए फरीदाबाद की अध्यक्ष डा. पुनीता हसीजा ने भी पुष्टि की है कि श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को 24 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर दिये गये। सूत्रों ने बताया कि श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल की ओर से आईएमए अध्यक्ष डॉ पुनीता हसीजा को जो धन्यवाद पत्र भेजा गया है, उसमें 18 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर भेंट करने के लिए आईएमए फरीदाबाद का धन्यवाद किया गया है। तो सवाल ये है कि आखिर 6 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर कहां गए। क्या आईएमए ने वाकई 18 ही दिए थे तो फिर कैमरे के सामने सीमा त्रिखा और कंवल खत्री ने कैसे 24 ऑक्सीजन कंसनट्रेटर देने की बात कही थी। इस मामले की जांच से या फिर आईएमए के स्पष्ट बयान से ही स्थिति साफ हो सकेगी। बता दें कि बाजार में एक आक्सीजन कंसनट्रेटर की कीमत कम से कम 70 हजार रुपये है।

11 लाख का हिसाब कौन देगा

श्रीराम अस्पताल में कोविड सेंटर 30 अप्रैल से उस समय शुरू हुआ था जब सीएमओ ने इसे हरी झंडी दिखाई थी। तब से इस पर 11 लाख रुपये खर्च हो चुके हैं। आखिर ये 11 लाख रुपये किसने खर्च किए। क्या प्रशासक ने खर्च किए या फिर कंवल खत्री ने खर्च किए। सूत्रों का कहना है कि सोसायटी के बैंक खाते में पड़ी एफडी के बदले प्रशासक ने कोविड सेंटर चलाने के लिए दस लाख रुपये लोन लिया है। सवाल यह है कि क्या रजिस्ट्रार द्वारा नियुक्त किए गए अस्थायी या काम चलाऊ प्रशासक को इस तरह लोन लेने का अधिकार भी है। इस संबंध में संस्था से जुड़े भाजपा नेता आनंदकांत भाटिया का दावा है किसी भी प्रशासक को सोसायटी के फंड के एवज में लोन लेने का अधिकार नहीं है। इस संबंध में सोसायटी एक्ट के नियम स्पष्ट है। श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी के लिए नियुक्त किये गये प्रशासक ने यह गलत परम्परा डाली है। हम इस मामले में एफआईआर करायेंगे और कोर्ट भी जायेंगे।

प्रशासक ने ये कहा

मजदूर मोर्चा ने प्रशासक रिटायर्ड कर्नल संतपाल से बात की। उनसे पूछा गया कि उन्होंने पांच लोगों की जो कमेटी बनाई, उसके चयन का आधार क्या था। संतपाल ने कहा कि मुझे विभिन्न क्षेत्रों के एक्सपर्ट चाहिए थे, जो लोग मुझसे जुड़ने को तैयार थे, मैंने उन्हें कमेटी में ले लिया। जब उनसे पूछा गया कि सोसायटी में विवाद है, कंवल खत्री निलंबित हैं। ऐसे में क्या दूसरे पक्ष के लोगों को भी सोसायटी में नहीं लिया जाना चाहिए था। इस पर संतपाल ने कहा कि अगर मजदूर मोर्चा संवाददाता चाहे तो उन लोगों से बात करा दे, हम उन्हें अब कमेटी में ले लेंगे। संतपाल ने कहा कि वो मजदूर मोर्चा संवाददाता तक को उस कमेटी में लेने को तैयार हैं। कोविड सेंटर पर 11 लाख खर्च होने की बात को उन्होंने गलत बताया। उन्होंने कहा कि यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर तो पहले से ही था। अलबत्ता कर्मचारियों की सैलरी आदि पर खर्चा हुआ है। कोविड सेंटर के चलाने पर 11 लाख रुपये खर्च नहीं हुए हैं। इसके बाद प्रशासक ने अपने फौजी होने और देश के लिए बलिदान देने जैसी बातें कहीं और कहा कि उन्होंने जो भी निर्णय लिए हैं वो सही हैं। क्योंकि कोरोनाकाल में यहां कोविड सेंटर बनाया जाना जरूरी था। उन्होंने बताया कि वे टीवी पर जाते रहते हैं और कई पत्रकार उनके मित्र हैं। वो मजदूर मोर्चा संवाददाता को भी मित्र बनाना चाहेंगे।

प्रशासक ने इस बात की पुष्टि की कि वे अस्पताल की चाबी मांगने लोकल धर्मगुरु पीर जगन्नाथ के पास गए थे। लेकिन उन्होंने चाबी हमें नहीं दी। हमने अस्पताल के बाहरी गेट की चाबी संस्था के उप प्रधान विशाल भाटिया से भी मांगी लेकिन उन्होंने भी नहीं दी। इस तरह प्रशासक के इस बयान से साफ जाहिर हो गया कि राजनीतिक रसूख और नगर निगम के एएमसी के विवादास्पद आदेश की आड़ में कंवल खत्री ने इस अस्पताल में जबरन घुसपैठ की और डुप्लीकेट चाबियों से ताले खोले गए हैं।

हालांकि रजिस्ट्रार सोसायटीज ने प्रशासक संतपाल को सोसायटी का विवाद सुलझाने के लिए प्रशासक बनाकर भेजा था। लेकिन संतपाल की मंशा कंवल खत्री की मदद से अस्पताल का संचालन लंबे समय तक के लिए करने की है।

एफडी के पैसे पर नजर

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के संस्थापक सदस्य एसएम हाशमी का कहना है कि उन्होंने स्व. बृजमोहन भाटिया के साथ मिलकर तमाम राजनीतिक लोगों की मदद से अस्पताल के लिए बीस लाख रुपये जुटाए थे। जिसकी हमने एफडी करा दी थी। लेकिन जिस तरह से कोविड सेंटर की आड़ में एफडी के बदले लोन लेकर पैसे खर्च किए जा रहे हैं, उन्हें कंवल खत्री गुट की नीयत अच्छी नहीं लग रही है। इसका मतलब यह भी हुआ कि जब अदालत के हस्तक्षेप पर हमें यह अस्पताल वापस मिलेगा तो सारे पैसों का वारा-न्यारा यह गुट कर चुका होगा। ये लोग ऐसा इसलिए भी कर रहे हैं कि अगर अस्पताल में हमें वापस मिलता है तो हम पैसे के अभाव में इसे चला ही नहीं पाएं। इस बीच भाजपा नेता सुरेन्द्र गेरा ने श्रीराम अस्पताल में बनाए गए कोविड सेंटर में मरीज से तीन हजार रुपये रोजाना लेने की आलोचना की है। उनका कहना है कि अस्पताल जिन उद्देश्यों के लिए खोला गया था, ये पैसे लेना जनता के साथ धोखाधड़ी है। जब सारा काम मदद से हो रहा है तो फिर मरीजों से पैसे क्यों लिए जा रहे हैं।

आरएसएस वाले छोड़ भागे कोविड सेंटर?

आरएसएस ने अपने संगठन सेवा भारती, और भारत विकास परिषद् के साथ सेक्टर-14 स्थित नशा मुक्ति केन्द्र में कोविड सेंटर शुरू कराया था। लेकिन अब यहां से आरएसएस के सारे पदाधिकारी और कार्यकर्ता भाग खड़े हुए हैं। गंगा शंकर भी यहां काफी दिनों से नजर नहीं आये। इस वजह से यह कोविड सेंटर अब बंद होने के कगार पर है। कोविड मरीज न आने की वजह से यह स्थिति आई। श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में खोले गये कोविड सेंटर के पीछे भी आरएसएस और गंगा शंकर थे लेकिन यहां से भी वो लोग अब गायब है। इस कोविड सेंटर में भी कोरोना के मरीज नहीं आ रहे हैं और कोई ताज्जुब नहीं कि यह कोविड सेंटर भी बंद हो जायेगा।

देखी-सुनी

खबरीलाल

क्या विज और फजीहत एक ही नाम है?

हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री और गृह मंत्री के बयान कई बार हरियाणा सरकार के लिए फजीहत की वजह बन जाते हैं। मुख्यमंत्री के निर्देश पर कई बार आला अधिकारी विज को समझाने की कोशिश करते हैं लेकिन नेता होने की वजह से वो अपने आगे किसी को सुनने को तैयार नहीं होते। फिलहाल उनके दो ताजा बयानों पर सरकार परेशान हुई। विज ने हाल ही में कहा कि हरियाणा सरकार ठग गुरु लाला रामदेव से कोरोनील दवा की एक लाख किट खरीदेगी। विवादों में फंसे रामदेव ने फौरन इसका स्वागत किया और ऐलोपैथी डॉक्टरों से कहा कि देखो हरियाणा सरकार मुझे मेरे प्रोडक्ट को किस तरह मान्यता देती है। हरियाणा सरकार नहीं चाहती थी कि रामदेव की वजह से कोरोनील विवाद में उसका नाम आए। दूसरा मामला तो और भी मजेदार है। विज ने 23 मई को बयान दिया कि हमने केंद्र सरकार से 12,000 एम्फोटेरिसिन-बी इंजेक्शन की मांग की है। अभी हमारे पास कुल 1250 एम्फोटेरिसिन-बी इंजेक्शन ही फंगस रोगियों के इलाज के लिए उपलब्ध हैं। हरियाणा सरकार विज के इस बयान से इसलिए परेशान हुई कि एक तरफ तो मुख्यमंत्री ब्लैक फंगस को रोकने के लिए की जा रही तैयारी के बड़े-बड़े दावा कर रही है। सीएम ने यह तक कहा कि हमारे पास पर्याप्त मात्रा में इंजेक्शन आदि हैं। दूसरी तरफ विज ने अपनी ही सरकार की असलियत बता दी कि कुल 1250 इंजेक्शन है। जबकि पुलिस राज्य के विभिन्न शहरों में इस इंजेक्शन की कालाबाजारी करने वालों को जोरशोर से पकड़ रही है। सीएम अपना सिर धुन रहे हैं कि आखिर इस विज का करें तो क्या करें।

बड़ा दांव और बड़े खिलाड़ी

पिछले हफ्ते मज़दूर मोर्चा में एक खबर प्रकाशित कर बताया गया था कि किस तरह कुछ लोग जिला प्रशासन के लोगो (चिह्न) का इस्तेमाल कर वेबसाइट लॉन्च कर रहे हैं। इसमें एनजीओ से लेकर पत्रकार तक शामिल हैं। फरीदाबाद में लॉन्च की गई वेबसाइट जैसी ही एक साइट गुरुवार को रेवाड़ी में भी लॉन्च की गई। फरीदाबाद में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर ने इसकी शुरुआत की थी तो रेवाड़ी में भी केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत से इसकी शुरुआत कराई गई। रेवाड़ी में भी लॉन्च की गई वेबसाइट पर वहां के जिला प्रशासन का लोगो इस्तेमाल किया गया। महत्वपूर्ण यह है कि रेवाड़ी के लिए बनाई गई वेबसाइट पर वही सूचनाएं हैं जो वहां का जिला प्रशासन सोशल मीडिया पर पहले ही डाल चुका है। जिन दो एनजीओ का उल्लेख फरीदाबाद की वेबसाइट पर किया गया था, रेवाड़ी की वेबसाइट में सिर्फ एक एनजीओ पहचान का जिक्र है, जबकि पहचान एनजीओ का कोई दफ्तर रेवाड़ी में नहीं है। फरीदाबाद की साइट में जिस जय सेवा फाउंडेशन का जिक्र है, उसका उल्लेख रेवाड़ी की वेबसाइट से गायब है। बहरहाल, फरीदाबाद वाली वेबसाइट की खबर मजदूर मोर्चा में छपने के बाद जय सेवा फाउंडेशन सक्रिय हुआ और उसके पदाधिकारियों ने बीके अस्पताल में खाद्य सामग्री मरीजों का बांटा और उन्हें एक-दो केले देते हुए फोटो मीडिया में छपवाया गया। लेकिन जय सेवा फाउंडेशन की उपस्थिति अभी इंटरनेट पर दर्ज नहीं हो सकी है। इस तरह फरीदाबाद के बाद रेवाड़ी में कोरोनाकाल में वेबसाइट लॉन्च आपदा में अवसर बन गया है।

भाजपा की बैठकों में ये तीर मारा गया

हाल ही में फरीदाबाद भाजपा की कोर कमेटी की बैठक में हुई, जिसमें मजदूर मोर्चा जैसे समाचारपत्र और स्वतंत्र मीडिया में केंद्र और हरियाणा सरकार की खराब हो रही छवि को किस तरह सुधारा जाए, इस पर विचार किया गया। इस बैठक में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर से लेकर सारे विधायक और भाजपा पदाधिकारी के अलावा संदीप जोशी भी मौजूद थे। इसमें सभी विधायकों से कहा गया कि वे अपने विश्वस्त लोगों की टीम बनाकर खट्टर और मोदी के खिलाफ हो रहे नकारात्मक प्रचार का सोशल मीडिया पर जवाब दें। मजदूर मोर्चा जैसे अखबारों में छप रही खबरों के जवाब में कुछ करके दिखाएं। लेकिन फरीदाबाद भाजपा की कोर कमेटी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण बैठक चंडीगढ़ से आनलाइन प्रदेश भाजपा महासचिव विनोद तावड़े ने की। इस बैठक का एजेंडा भी छवि सुधार ही था लेकिन विनोद तावड़े उस वक्त गुस्से में आ गए जब उन्होंने इस प्रदेशस्तरीय आनलाइन बैठक में कुछ मंत्रियों के पीए को भी सारी बातें सुनते हुए पाया। विनोद तावड़े ने सभी को डांटा और कहा कि मंत्रियों के पीए को इन बैठकों में शामिल नहीं होने दिया जाए, क्योंकि वो हमारी सारी अंदरुनी बातें और रणनीति बाहर लीक कर सकते हैं और विरोधी मीडिया और विपक्ष को उन्हें भुनाने का मौका मिल जाएगा। इसलिए ऐसी बैठकों में मंत्रियों के पीए का आना वर्जित रहेगा। दरअसल, विनोद तावड़े को आरएसएस ने हरियाणा भाजपा में भेजा है। सरकार को तमाम महत्वपूर्ण निर्णय कैसे लेना है, इसकी गाइडलाइंस तावड़े ही जारी करते हैं। चूंकि मंत्रियों के ज्यादातर पीए सरकारी कर्मचारी होते हैं तो अगर वो नेकरधारी गिरोह का नहीं हुआ तो बाहर सूचनाएं दे सकता है। कुल मिलाकर निचोड़ यह निकल रहा है कि आरएसएस केंद्र व हरियाणा की मीडिया और सोशल मीडिया में बिगड़ती छवि को लेकर बहुत परेशान है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06